दस कोड़ों की

सज़ा

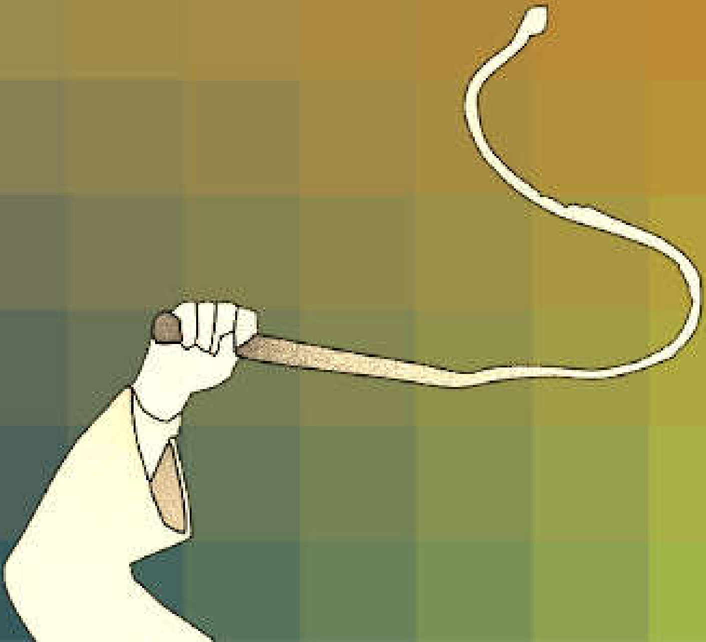

दस कोड़ों की

सज़ा

das koṛoṅ ki sazā

Punishment of 10 Lashes
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

नए उस्ताद का क़द बड़ा छोटा था। लगता था कि देहाती स्कूल के शरारती बच्चों पर क़ाबू पाना उसके बस का रोग नहीं। पहले ही दिन उसे देखकर बच्चों के वालिदैन ने कहा था, “कहाँ यह बौना उस्ताद और कहाँ हमारे लठबाज़ देहाती लड़के!

यह स्कूल छः माह से बंद रहा था। जब से तीन चार लड़कों ने गमलों से पुराने उस्ताद की मरम्मत की थी, कोई उधर का रुख़ नहीं करता था। ताहम नए उस्ताद ने गाँव के बुज़ुर्गों को यक़ीन दिलाया कि वह लड़कों को क़ाबू में लाने की पूरी कोशिश करेगा।

पहले ही दिन स्कूल में माहौल कशीदा हो गया। लड़के उस्ताद को चूहे की ताक में बैठी बिल्ली की तरह घूर रहे थे। उस्ताद साहिब इन हालात से नावाक़िफ़ न थे। वह तुलबा से मुख़ातिब हुए, “बच्चो! स्कूल को चलाने के लिए ज़रूरी है कि हम पहले चंद उसूलों पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ। यह आपका स्कूल है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप ही यह उसूल बनाएँ।”

चंद लमहों के लिए ख़ामोशी छा गई। लड़के हैरान थे। क्या उस्ताद साहिब वाक़ई हमसे उसूल बनवाएँगे? क़दरे तवक़्क़ुफ़ के बाद एक लड़का बोला, “स्कूल में किसी को झूट नहीं बोलना चाहिए।” चंद लड़कों ने उसकी ताईद की तो उस्ताद ने यह उसूल तख़्ताए-स्याह पर लिख दिया।

एक और लड़के ने मशवरा दिया,“चोरी नहीं करनी चाहिए।”

यके बाद दीगरे लड़कों ने उसूल पेश किए। फिर उस्ताद साहिब ने कहा, “बेटो! इन उसूलों की ख़िलाफ़वरज़ी करनेवालों की सज़ा भी मुक़र्रर होनी चाहिए।”

कुछ देर ग़ौर करने के बाद एक कड़ियल जवान ने कहा, “मुजरिम को दस कोड़ों की सज़ा मिलनी चाहिए।” यह कड़ियल जवान सबसे सीनियर तालिब-इल्म था। वह बिलकुल देव-सा लगता था और अपने जुस्से के मुताबिक़ बेतहाशा खाता था। वह हर रोज़ पराठों की पोटली बाँधकर स्कूल ले आता और एक दरख़्त पर लटकाकर वक़्फ़े के दौरान पेट भरकर खा लेता।

स्कूल में एक ऐसा लड़का भी था जो अपने साथ खाने को कुछ नहीं लाता था। वह तमाम दिन भूका रहता था। इसी लिए वह सबसे कमज़ोर था। एक दिन उसकी नज़र दरख़्त के साथ टँगी हुई पोटली पर पड़ी। जब उसने खोलकर देखा तो पराठों की ख़ुशबू से उसके मुँह में पानी भर आया। वह बेइख़्तियार पराठे खाने लगा।

वक़्फ़े के वक़्त अचानक शोर मच गया, “चोर,चोर!” सब लड़के जमा हो गए। चोरी की बाबत सुनते ही वह आग-बगूला हो गए कि आख़िर किसने हिम्मत करके हमारे उसूलों को तोड़ डाला है। जल्द ही उस लड़के को पकड़ा गया। कुछ देर के लिए ख़ामोशी छा गई। उस्ताद मुक़र्ररा सज़ा का नाम लेना नहीं चाहता था, लेकिन आख़िरकार उसे मजबूरन कहना पड़ा, “अपनी पीठ नंगी करो, क्योंकि उसूल के मुताबिक़ तुम्हें सज़ा दीनी पड़ेगी।”

कितना क़ाबिले-रहम मंज़र था। लड़के कमज़ोर लड़के की एक एक पसली तक गिन सकते थे। उनको मालूम था कि वह दस कोड़े खाते ही ज़मीन पर ढेर हो जाएगा। आख़िर वही कड़ियल लड़का पुकार उठा, “क्या इसकी इजाज़त है कि कोई और इसकी सज़ा बरदाश्त कर ले?”

उस्ताद साहिब ने कुछ देर सोचकर कहा, “अगर उसूल बनानेवाले इसकी इजाज़त दें और कोई इसको बरदाश्त करने को तैयार हो तो उसूल का तक़ाज़ा यों भी पूरा हो जाएगा।”

तब वही कड़ियल लड़का खड़ा होकर अपनी क़मीस उतारने लगा और कहा, “ मैं इसकी सज़ा उठाने को तैयार हूँ।” यह कहकर उसने उसकी सज़ा बरदाश्त कर ली।

****

मैं और आप भी उसी चोर लड़के की तरह हैं। हम सबने अल्लाह के अहकाम को तोड़ा है, इसलिए हम सब जहन्नुम की आग में जलने के लायक़ हैं। तो क्या इस सज़ा से बचने का कोई रास्ता है? ज़रूर। दर्जे-ज़ैल शरायत पर हम नजात पा सकते हैं।

- क्या ख़ुदा चाहता है कि हम सज़ा से बच जाएँ? ज़रूर। अल्लाह हमसे मुहब्बत रखता है। वह नहीं चाहता कि हम सज़ा पाएँ। क्योंकि

  > ख़ुदावंद...नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए बल्कि यह कि सब तौबा की नौबत तक पहुँचें। (इंजील जलील, 2 पतरस 3:9)

- क्या कोई हमारी सज़ा बरदाश्त करने को तैयार है? ज़रूर। हक़ तआला ने हज़रत ईसा को जो बेगुनाह थे हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि वह अपने आपको हमारी ख़ातिर क़ुरबान करे। उस कड़ियल लड़के की तरह हज़रत ईसा ने हमारे वास्ते वह सज़ा बरदाश्त की जिसके हम लायक़ हैं।

- क्या हम हज़रत ईसा की यह क़ुरबानी क़बूल करने को तैयार हैं? हमारा फ़रज़ है कि इस क़ुरबानी को क़बूल करें। तब ही हम सज़ा से बचेंगे।